पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-जी-3-डी.एल. (एन.)/084/2021-23 प्रकाशित:01.03.2021 इस अंक का मूल्य 2 रूपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-*110007*, चलभाष : 9810117464, 9868051444

केवल 100/- रूपये का सहयोग करें

कृपया अपनी प्रिय पत्रिका को नियमित को बनाये रखने के लिये केवल 100/— रू का सहयोग ''युवा उदघोष, A/N0.20024363377, IFSCode.MAHB0000901, बैंक आफ महाराष्ट्र, डा.मुखर्जी नगर, दिल्ली—110009 पर आनलाईन भेंजें।

— अनिल आर्य

वर्ष-37 अंक-19 फाल्गुन-2077 दयानन्दाब्द 198 01 मार्च से 15 मार्च 2021 (प्रथम अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.

प्रकाशित: 01.03.2021, E-mail : yuva.udghosh1982@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् द्वारा कोरोना काल में भी 181वां वेबनार सम्पन्न

वैदिक सिद्धान्त सर्वोपरि आर्य गोष्ठी सम्पन्न

वैदिक मान्यताएं पाखंड अंधविश्वास से बचाती है —आचार्य विजयभूषण आर्य

शौर्य, पराक्रम व हिन्दुत्व के गौरव थे वीर शिवाजी —राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य

वीरवार,18 फरवरी 2021, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में वैदिक सिद्धान्त सर्वोपरि विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन जूम पर किया गया । साथ ही हिन्दू वीर योद्धा छत्रपति शिवाजी की 391 वी जयंती पर श्रद्धांजलि अर्पित की गई । यह परिषद का कॅरोना काल में 176वां वेबिनार था। वैदिक विद्वान आचार्य विजय भूषण आर्य ने कहा कि वैदिक सिद्धान्त सर्वश्रेष्ठ है और व्यक्ति को अंधविश्वास, पाखंड से बचाने का कार्य करते हैं । उन्होंने कहा कि जिस व्यवस्था में बुरे काम व पाप क्षमा होते हैं, वह व्यवस्था पापों को बढ़ाने वाली होती है । पाप न हों अथवा कम से कम हों, इसके लिए ही पाप की कठोर व कठोरतम् सजा का प्रावधान न्यायसंगत एवं अति आवश्यक है। वैदिक धर्म में सृष्टि के आरम्भ से ऐसा ही है। अतः सबको विवेक से काम लेना होगा अन्यथा उसका परिणाम तो उन्हें स्वयं ही भोगना है। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि विश्व के इतिहास में छत्रपति शिवाजी सरीखा कोई वीर दिखाई नहीं देता है जिन्होंने 19 वर्ष की आयु में ही कई दुर्गों पर अधिकार कर लिया था और मुगल सल्तनत की नींव हिला डाली थी। उन्होंने छापामारी युद्ध की शुरुआत की और कई मुगल सेना को परास्त किया और मुगल सरदार अफजल खा का वध किया । आज भी इतिहास अपने आप को दुहरा रहा है फिर वीर शिवाजी जैसे वीरो की आवश्यकता है जो आंतकवाद को समाप्त कर सके । वीर शिवाजी का जन्म 19 फरवरी 1630 को शिवनेरी दुर्ग,पूना में हुआ था पिता का नाम शाहजी भोसले व माता जीजाबाई थी। नयी युवा पीढ़ी को भारतीय महापुरुषों व सेनानियों को जानने व पढ़ने की आवश्यकता है तभी उनसे प्रेरणा लेकर भारत की अखंडता की रक्षा करने में सक्षम हो सकेंगे। मुख्य अतिथि मुनि राजेन्द्र आर्य(प्रधान, आर्य समाज, कोटा राजस्थान) ने कहा कि महर्षि दयानन्द के आगमन व आर्य समाज की स्थापना होने से धर्म सम्बन्धी विषयों के चिन्तन, विचार, प्रचार, कर्मकाण्ड आदि पर नई सोच ने जन्म लिया आज आम जन को यह बात बतलाने की आवश्यकता है। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद उत्तर प्रदेश के महामंत्री प्रवीण आर्य ने कहा कि यदि सभी लोग वेदों के अनुसार जीवन व्यतीत करें, वेदों को सर्वोपरि माने तो मनुष्य जीवन सफल हो जाएगा। योगाचार्य सौरभ गुप्ता ने कहा कि युवाओं के लिये वीर शिवाजी से अच्छा हीरो नहीं हो सकता उन्हें अपना आइकॉन बनाना चाहिए। गायिका संगीता आर्या गीत, कुसुम भण्डारी,रविन्द्र गुप्ता,संतोष आर्या,जनक अरोड़ा, प्रतिभा कटारिया, काशीराम आर्य,विभा आर्या,हरि ओम आर्य,संध्या पांडेय आदि ने अपने गीतों से सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। प्रमुख रूप से डॉ रचना चावला, बिन्दु मदान, डॉ सुषमा आर्या, ईश्वर देवी आर्या,आर पी सूरी,विजय हंस,ललित बजाज,कुमकुम आर्या आदि उपस्थित थे।

स्वतन्त्रता सेनानी स्वामी श्रद्धानंद का 165 वां जन्मोत्सव सम्पन्न

गुरूकुलीय शिक्षा प्रणाली को स्वामी श्रद्धानंद ने पुनर्जीवित किया —राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य

सोमवार 22 फरवरी 2021, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में सुप्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी, गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार के संस्थापक स्वामी श्रद्धानंद जी का 165 वां जन्मदिन ऑनलाइन जूम पर आयोजित किया गया। उल्लेखनीय है कि स्वामी श्रद्धानंद जी का जन्म 22 फरवरी 1856 को जालन्धर के तलवन ग्राम में हुआ था।यह कोरोना काल में परिषद का 178 वां वेबिनार था। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि स्वामी श्रद्धानंद महान स्वतंत्रता सेनानी रहे उन्होंने दिल्ली के चांदनी चौक पर रौलट एक्ट के विरुद्ध प्रदर्शन का नेतृत्व किया और अंग्रेजी सिपाहियों को छाती तान के बोला लो खड़ा हूँ गोली चला लो और उनकी निर्भीकता के आगे सिपाहियों की संगीने झुक गयी।उन्होंने लुप्त होती पुरातत्व गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को पुनर्जीवित किया और गुरुकुल कांगड़ी की इसके लिए स्थापना की।स्वामी जी ने ही जालंधर में महिला कॉलेज की स्थापना की।अफ्रीका से गुरुकुल कांगड़ी में पधारने पर मिस्टर गांधी को ष्महात्माष की उपाधि से सम्मानित किया बाद में वह महात्मा गांधी कहलाये।भारतीय इतिहास में पहली बार दिल्ली की जामा मस्जिद के मेम्बर पर गैर मुस्लिम स्वामी श्रद्धानंद ने वेद मंत्रों के साथ हिन्दू मुस्लिम एकता का संदेश दिया यह सामाजिक समरसता का अनमोल उदाहरण है।दलितों के उत्थान के लिए भी अनेकों विद्यालय खोले और मुख्य धारा से जोड़ने का काम किया। 1922 में सिखों के ष्गुरु का बागष आंदोलन का नेतृत्व किया और गिरफ्तारी दी।आज के संदर्भ में स्वामी श्रद्धानंद जी का जीवन प्रेरणा देने वाला है वह सब कुछ होम कर सही मायनों में समाज के लिए ही जिये,वह महर्षि दयानंद जी के सच्चे अनुगामी स्वाधीनता, स्वदेशी,स्वराज्य,शिक्षा व वैदिक धर्म प्रचारक के लिए समर्पित रहे। आर्य नेता प्रवीण आर्य ने कहा कि स्वामी श्रद्धानंद जी ने घर वापिसी का अभियान चलाया,जो लोग किन्हीं कारणों से हिन्दू धर्म छोड़ गये थे उनके लिए वापिस हिन्दू धर्म में आने के लिए ष्शुद्धि आंदोलनष की शुरुआत की।मुख्य अतिथि जितेन्द्र खरबंदा ने स्वामी श्रद्धानंद बलिदान भवन को राष्ट्रीय स्मारक बनाने की मांग की। कार्यक्रम अध्यक्ष आर्य नेत्री सुदेश आर्या ने उन्हें नारी उद्धारक बताया।योगाचार्य सौरभ गुप्ता ने युवाओं से उनके गुणों को आत्मसात करने का आह्वान किया युवा गायक अंकित उपाध्याय ने ओजपूर्ण गीतों द्वारा श्रद्धांजलि अर्पित की,साथ ही गायिका संगीता आर्या,नरेंद्र आर्य सुमन, दीप्ति सपरा,किरण सहगल, संध्या पाण्डे,रवीन्द्र गुप्ता आदि ने गीत प्रस्तुत किये। आचार्य महेन्द्र भाई,के. के.यादव, आनन्द प्रकाश आर्य,वीना वोहरा, जनक अरोड़ा,सुरेंद्र बुद्धिराजा, ईश आर्य,कुसुम भंडारी,देवेन्द्र भगत आदि उपस्थित थे।

ऋषि दयानन्द को शिवरात्रि को हुए बोध से विश्व से अविद्या दूर हुई

—मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

वर्तमान समय से लगभग 5,200 वर्ष पूर्व महाभारत का विनाशकारी युद्ध हुआ था। महाभारत काल तक वेद अपने सत्यस्वरूप में विद्यमान थे जिसके कारण संसार में विद्या व सत्य ज्ञान का प्रचार व प्रसार था। महाभारत के बाद वेदों के अध्ययन अध्यापन तथा प्रचार में बाधा उत्पन्न हुई जिसके कारण विद्या धीरे धीरे समाप्त होती गई और इसका स्थान अविद्या व अविद्यायुक्त मतों, मान्यताओं व पन्थों आदि ने ले लिया। अविद्या को अज्ञान का पर्याय माना जाता है। अविद्या के कारण लोग ईश्वर तथा आत्मा के सत्यस्वरूप तथा ज्ञान से युक्त मनुष्यों के सत्य वैदिक कर्तव्यों को भी भूल गये थे। वेदों के अध्ययन व प्रचार की समुचित व्यवस्था न होने के कारण अविद्या व अविद्या से उत्पन्न होने वाले अन्धविश्वास तथा सामाजिक कुरीतियों में वृद्धि होती गई। सृष्टि के आदि काल से आर्यावर्त की सीमाओं में वर्तमान के अनेक देश आते थे। आर्यावर्त के अन्तर्गत राज्य भी सिकुड़ कर छोटे छोटे स्वतन्त्र राज्यों व रियासतों में परिणत हो गये थे। अन्धविश्वासों एवं सामाजिक कुरीतियों के कारण मानव का निजी जीवन अविद्या से युक्त था। इसके कारण सगठित रूप से देशज्ञ व समाज की उन्नति के जो प्रयास करने होते हैं वह भी शिथिल व न्यून होते थे जिससे देश असंगठित होता गया और देश में अविद्या पर आधारित अनेक विचारधारायें एवं अनेक धार्मिक मत व सम्प्रदाय अस्तित्व में आते रहे।

मध्यकाल व उसके बाद के सभी मत अविद्या के पर्याय अन्धविश्वास, पाखण्ड तथा सामाजिक कुरीतियों से युक्त हो गये। मनुष्य समाज भी नाना प्रकार की जन्मना जातियों एवं ऊंच–नीच की भावनाओं से युक्त हो गया। ऐसे समय में मनुष्य जाति की उन्नति व उसके सुखों की प्राप्ति की सम्भावनायें भी न्यून व समाप्त हो गईं थीं। देश के कुछ भाग पहले यवनों तथा बाद में अंग्रेजों की गुलामी को प्राप्त हुए जिससे देश की जनता नरक के समान दुःखों से युक्त जीवन जीने पर विवश हुई। ऐसे अज्ञानता वा अविद्या के समय में ऋषि दयानन्द (1825–1883) का आविर्भाव हुआ। ऋषि दयानन्द एक पौराणिक शिवभक्त परिवार में जन्में थे। अपनी आयु के चौदहवें वर्ष में शिवरात्रि पर्व पर मूर्तिपूजा व व्रत उपवास करते हुए उन्हें बोध की प्राप्ति हुई थी। उन्हें बोध हुआ कि सच्चे शिव व उसकी मूर्ति के स्वरूपों व गुण, कर्म व स्वभावों में अन्तर है। जिस सच्चे शिव की लोग उपासना करते हैं वह उसकी मूर्ति बनाकर परम्परागत विधि से पूजा करने पर वह उपासना सत्य सिद्ध नहीं होती। उनके मन में मूर्तिपूजा के प्रति अनेक आशंकायें उत्पन्न हुइं। वह उनके समाधान अपने विद्वान पिता तथा विद्वान पण्डितों से जानना चाहते थे परन्तु किसी से उनका समाधान नहीं हुआ। कुछ काल बाद अपनी बहिन व चाचा की मृत्यु होने पर भी उन्हें मृत्यु की औषधि को जानने का बोध हुआ था। अपने प्रश्नों के उत्तर न मिलने और इनके अनुसंधान में अपने माता–पिता व परिवार का सहयोग न मिलने के कारण उन्होंने आयु के बाइसवें वर्ष में अपने पितृगृह का त्याग कर दिया था और अपना जीवन अपनी आशंकाओं को दूर करने सहित सच्चे शिव व ईश्वर की खोज, उसकी प्राप्ति, ईश्वरीय ज्ञान वेद के अध्ययन व प्रचार सहित देश व समाज सुधार के कार्यों में व्यतीत किया। ऋषि दयानन्द योग व वेद विद्या में प्रवीण होकर ऋषि बने थे। उन्होंने अपने तप व अध्ययन तथा सत्यासत्य की परीक्षा से सत्य व असत्य के यथार्थस्वरूप को जान लिया था। उन्होंने जाना था कि मनुष्यों के सभी दुःखों का कारण अविद्या वा वेदों के सत्य ज्ञान को न जानना है। उन्होंने अनुभव किया था कि वेदों के सत्यार्थ को जानकर तथा उसके अनुरूप सभी देश व विश्ववासियों का जीवन बनाकर ही अविद्या को दूर कर विश्व के सभी मनुष्यों के जीवन को सत्य ज्ञान, शारीरिक व आत्मिक बल सहित सुख व शान्ति से युक्त किया जा सकता है। इसी कार्य को उन्होंने पूर्ण निष्पक्षता तथा अपने प्राणों को जोखिम में डाल कर किया जिसका पूरे विश्व पर सकारात्मक प्रभाव हुआ। उनके कार्यों से पूरे विश्व में ही वेदों व विद्या के सत्यस्वरूप का प्रकाश हुआ। योग विद्या में निष्णात होने तथा विश्व में वेदों का प्रचार कर अविद्या को दूर करने में आंशिक सफलता प्राप्त करने के कारण से ही ऋषि दयानन्द विश्व के सभी महापुरुषों से भिन्न एवं ज्येष्ठ हैं। उनके जीवन तथा कार्यों को जानकर, वेदाध्ययन कर तथा वैदिक साहित्य उपनिषद, दर्शन, विशुद्ध मनुस्मृति, सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, संस्कार विधि एवं आर्याभिविनय आदि ग्रन्थों का अध्ययन कर ही मनुष्य जीवन को विद्या से युक्त तथा अविद्या से मुक्त किया जा सकता है। विद्या की प्राप्ति कर ईश्वर का साक्षात्कार करना तथा अमृत व मोक्ष को प्राप्त होना ही मनुष्य जीवन व जीवात्मा का मुख्य लक्ष्य होता है। ऋषि दयानन्द ने वेदप्रचार कर सभी मनुष्यों को ईश्वर का सत्य ज्ञान कराया। उन्होंने मनुष्यों को ईश्वर की प्राप्ति, उसका साक्षात्कार व प्रत्यक्ष कराने सहित मोक्ष प्राप्ति में अग्रसर कर जीवन को कृतकार्य होने का ज्ञान कराया। इस कारण से ऋषि दयानन्द विश्व के अद्वितीय महापुरुष, महामानव, वेद ऋषि तथा ईश्वर के एक महान पुत्र हैं।

ऋषि दयानन्द को अपने जीवन के चौदहवें वर्ष में शिवरात्रि के दिन ईश्वर के सत्यस्वरूप को जानकर उपासना करने का बोध हुआ था। इसी का परिणाम उनके ईश्वर सिद्ध योगी बनने सहित वेद वेदांगों का अपूर्व विद्वान व ऋषि बनने के रूप में हमारे सम्मुख आया। ऋषि दयानन्द सच्चे वेद प्रचारक, ईश्वर के सत्यस्वरूप व गुण–कर्म–स्वभाव का ज्ञान कराने वाले, सोलह संस्कारों से युक्त जीवन बनाने हेतु संस्कार विधि ग्रन्थ लिखकर देने वाले, समाज में प्रचलित सभी अन्धविश्वासों तथा पाखण्डों सहित सभी मिथ्या व कृत्रिम सामाजिक मान्यताओं को दूर करने वाले, पूर्ण युवावस्था में कन्या व वर के गुण, कर्म व स्वभाव के अनुसार विवाह का विधान करने वाले, विधवाओं व महिलाओं के प्रति विशेष सम्मान एवं आदर की भावना रखने वाले, महिलाओं पर मध्यकाल में हुए अन्यायों को दूर कर उनके वेदाध्ययन एवं नारी सम्मान का अधिकार दिलाने वाले, देश को आजादी का मन्त्र देने वाले तथा जीवन के सभी क्षेत्रों से अविद्या व मिथ्या मान्यताओं को दूर कर सत्य कल्याणप्रद वैदिक मान्यताओं को प्रचलित कराने वाले अपूर्व महापुरुष हुए हैं। उनके जीवन चरित्र सहित उनके प्रमुख ग्रन्थों सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, संस्कारविधि, आर्याभिविनय सहित वेदभाष्य को पढ़कर उनके ज्ञान व व्यक्तित्व से परिचित हुआ जा सकता है। ऋषि दयानन्द अपने व पराये की भावना से सर्वथा मुक्त एवं पक्षपातरहित महात्मा व ऋषि थे। उन्होंने स्वमत व परकीय मतों के प्रति किसी प्रकार का भेदभाव नहीं किया।

ऋषि दयानन्द संसार के सभी मनुष्यों व प्राणियों को ईश्वर की सन्तान व अपने समान सुख व दुःखों का अनुभव करने वाला मानते थे। गाय के प्रति एक सच्चे मानव की वेदना को अनुभव कर उन्होंने गोरक्षा का महान कार्य किया और गोरक्षा व गोसंवर्धन पर एक अद्वितीय लघु ग्रन्थ 'गोकरुणानिधि' लिखा। ऋषि दयानन्द ने ही सत्य वैदिक मान्यताओं वा वैदिक धर्म के प्रचार हेतु ही आर्यसमाज संगठन की स्थापना 10 अप्रैल, 1875 को मुम्बई में की थी। आर्यसमाज ने देश से अन्धविश्वास, ईश्वर की मिथ्यापूजा को दूर करने सहित वायुशोधक तथा स्वास्थ्यप्रद यज्ञों के प्रचार का भी महान कार्य किया। देश को अविद्या व अशिक्षा के कूप से निकालने के लिए ऋषि दयानन्द द्वारा प्रचारित विचारों के अनुसार उनके शिष्यों ने देश में गुरुकुल तथा दयानन्द ऐंग्लो वैदिक स्कूल व कालेजों को स्थापित कर देश से अज्ञान दूर करने का भी अपूर्व कार्य किया। ऋषि दयानन्द तथा उनके आर्यसमाज ने आर्य हिन्दू जाति को अनेकानेक विदेशी षडयन्त्रों तथा उन्हें धर्मान्तरित होने से बचाया। विदेशी शासन व विदेशी मत से देश को सुरक्षित करने की प्रेरणा की जो उनके बाद सफल हुई लगती है। ऐसे अनेकानेक कार्य ऋषि दयानन्द ने किये जिनकी गणना करना कठिन व असम्भव है। यह सब लाभ ऋषि दयानन्द को शिवरात्रि पर हुए बोध के कारण सम्भव हो सके। इसके लिए ईश्वर का कोटिशः धन्यवाद है। सारा देश व मानवता ऋषि दयानन्द की ऋणी है। देश व विश्व के सभी लोग ऋषि दयानन्द के कार्यों से किसी न किसी रूप में लाभान्वित हैं। ईश्वर व ऋषि दयानन्द के उपकारों के लिए उनको सादर नमन है।

— 196 चुक्खूवाला–2, देहरादून–248001, फोनः 09412985121

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के ''मार्च माह'' की वेबिनार सूची ''जूम व फेसबुक लाईव''

मार्च माह–2021 के विस्तृत कार्यक्रम

1. 182 वां–मंगलवार, 2 मार्च 2021,सायं 5 बजे,विषयः''गीत–संगीत माला''–रविन्द्र गुप्ता,दीप्ती सपरा
2. 183 वां–वीरवार, 4 मार्च 2021,सायं 5 बजे, विषयः''अष्टांग योग : एक वरदान''–सौरभ गुप्ता
3. 184 वां–शनिवार, 6 मार्च 2021,सायं 5 बजे, विषयः''शान्ति प्रकरण में शान्ति के वरदान''–आ.चन्द्रशेखर शर्मा
4. 185 वां–सोमवार, 8 मार्च 2021,प्रातः 11 बजे, ''नारी उत्थान में महर्षि दयानन्द की भूमिका''–डा.सुषमा आर्या
5. 186 वां–बुधवार, 10 मार्च 2021,सायं 5 बजे, विषयः''ऋषि बोधोत्सव को सार्थक कैसे बनाये''–आर्य रविदेव गुप्ता
6. 187 वां–शुक्रवार, 12 मार्च 2021,सायं 5 बजे, ''वैदिक संध्या–क्यों,कैसे व शुद्ध उच्चारण''–आ.विजयभूषण आर्य
7. 188 वां–रविवार, 14 मार्च 2021,प्रातः 11 बजे, विषयः ''बोधोत्सव के मायने''–डा.नरेन्द्र आहुजा विवेक
8. 189 वां–मंगलवार, 16 मार्च 2021,सायं 5 बजे, विषयः''बिना दवाओं के कैसे रहे स्वस्थ''–डा.सुनील आर्य
9. 190 वां–वीरवार, 18 मार्च 2021,सायं 5 बजे, विषयः''हमारा आहार विहार''–डा.करूणा चान्दना
10. 191 वां–शनिवार, 20 मार्च 2021,सायं 5 बजे, विषयः''मोक्ष : कल्पना अथवा वास्तविकता''–डा.मनोज तंवर
11. 192 वां–सोमवार, 22 मार्च 2021,सायं 5 बजे, विषयः ''शहीद दिवस पर संगीत संध्या''–नरेन्द्र सुमन,सुदेश आर्या
12. 193 वां–बुधवार, 24 मार्च 2021,सायं 5 बजे, विषयः''युवा और आर्य समाज''–डा.दिनेश चहल
13. 194 वां–शुक्रवार, 26 मार्च 2021,सायं 5 बजे, विषयः'' आर्य समाज और राष्ट्र निर्माण''–आ.विष्णुमित्र वेदार्थी
14. 195 वां–रविवार, 28 मार्च 2021,प्रातः 11 बजे, विषयः''होली का वैदिक स्वरूप''–दर्शनाचार्य विमलेश बंसल
15. 196 वां–मंगलवार, 30 मार्च 2021,सायं 5 बजे, विषयः''अस्थमा में होम्योपैथी है कारगर''–डा.प्रमोद पाल

55 वीं पुण्यतिथि पर वीर सावरकर को दी श्रद्धांजलि

हिन्दी, हिन्दू, हिंदुस्तान की अवधारणा को सावरकर ने जन्म दिया –राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य

शुक्रवार 26 फरवरी 2021, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद ने महान स्वतंत्रता सेनानी विनायक दामोदर सावरकर की 55 वीं पुण्य तिथि पर गोष्ठी का ऑनलाइन जूम पर आयोजन कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की और उनके कार्यों,उपलब्धियों पर चर्चा की। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि हिन्दू राष्ट्रवाद की अवधारणा को वीर सावरकर ने जन्म दिया साथ ही हिन्दी, हिन्दू,हिंदुस्तान का उदघोष भी उन्हीं की देन रही। वह हिन्दू राष्ट्र निर्माण के प्रबल समर्थक रहे, विश्व के इतिहास में वह पहले व्यक्ति थे जिन्हें 24 फरवरी 1910 व 31 जनवरी 1911 को दो बार आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई। विश्व इतिहास में पहले व्यक्ति थे जिनकी पुस्तक ष1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्रामष पुस्तक को छपने से पहले ही प्रतिबंधित कर दिया गया। उन्होंने लंदन से ही क्रांति की शुरुआत की व स्वदेशी आंदोलन शुरू कर विदेशी कपड़ो की होली जलाई। उनका मुकदमा अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय हेग में चला। उन्होंने ही पूर्ण स्वतंत्रता की मांग जोर शोर से उठायी उनसे ब्रिटिश सरकार काँपती थी।आज की युवा पीढ़ी को उनका जीवन चरित्र पढ़ने व बतलाने की आवश्यकता है जिससे वह स्वतंत्रता संग्राम में उनके योगदान को जान सके कि आजादी केवल चरखे तकली से नहीं आयी अपितु हजारों नोजवानो ने अपना जीवन देश के लिए होम कर दिया। प्रांतीय महामंत्री प्रवीण आर्य ने कहा कि सावरकर ने षमित्र मेलोंष के नाम से युवाओं को संगठित किया फिर अभिनव भारत संगठन की स्थापना की। वह भारत को पुण्य भूमि मानते थे।वह एक वकील,कवि लेखक, राजनीतिज्ञ,नाटककार भी थे उन्होंने तत्कालीन रूढ़ियों व कुरूतियों पर भी प्रहार किया।उनकी मृत्यु 26 फरवरी 1966 को मुंबई में हुई थी। प्रमुख रूप से आचार्य महेंद्र भाई, डॉ आर के आर्य,आंनद प्रकाश आर्य,सौरभ गुप्ता, वेदप्रकाश आर्य,प्रतिभा कटारिया, नीलम आर्या, के के यादव,प्रवीना ठक्कर आदि उपस्थित थे ।

मन की दिव्य शक्तियाँ पर गोष्ठी व राष्ट्रीय कवि निराला को किया नमन

सफलता के लिए मन पर नियंत्रण आवश्यक–आचार्य चंद्रशेखर शर्मा (ग्वालियर)

कवि निराला का ओजपूर्ण व्यक्तित्व रहेगा सदैव प्रकाश स्तम्भ–राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य

शनिवार, 20 फरवरी 2021, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में मन की दिव्य शक्तियां विषय पर गोष्ठी का आयोजन जूम पर ऑनलाइन किया गया । साथ ही राष्ट्रीय कवि सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला की 125 वी जयन्ती पर श्रद्धांजलि अर्पित की गई ।यह परिषद का कॅरोना काल में 177 वां वेबिनार था। वैदिक विद्वान आचार्य चन्द्रशेखर शर्मा (ग्वालियर) ने मन की दिव्य शक्तियों का मनमोहक चित्रण करते हुए कहा कि यदि जीवन में सफलता प्राप्त करनी है तो मन पर नियंत्रण आवश्यक है । किया। मानवशरीर में मन अपूर्व,अद्भुत और अपरिमित है।मन की उत्पत्ति सात्त्विक और राजसिक भाव से होती है।सत्त्वभाव से मन में उत्साह, प्रसन्नता, पावनता, कार्यदक्षता और एकाग्रता निरंतर बढ़ती है।राजसिक भाव से मन में चंचलता, गतिशीलता, क्रियाशीलता,भोगविलासिता,अंहकार –अभिमानिता और हठधर्मिता बढ़ती है। आचार्य श्री ने कहा कि सूक्ष्म शरीर के संघात में मन की महान भूमिका है।यह मन दैव, यक्ष, प्रज्ञान, चेतस्, धृति, प्रत्यग्भान, विश्वभान और वशीकरण है।सात्त्विक कर्मों के संपादन से यह मन शान्त,निर्मल और चन्द्रबिम्बवत् सौम्यपूर्ण होता है। राजसिककार्यों के करते समय मन रक्त वर्ण,धूम्रमिश्रित और लाल रंग की रश्मियों से भर जाता है।तामसिककृत्यों में मन संकुचित,मलिन और मुरझाया सा रहता है।आचार्य जी ने मन की महानता बताते हुए समझाया कि मन मोक्ष प्राप्ति पर्यन्त बुद्धि के साथ सहकारी बनकर रहता है। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने राष्ट्रीय कवि सूर्यकान्त त्रिपाठी षनिरालाष की 125 जयंती पर स्मरण करते हुए उन्हें आधुनिक हिन्दी साहित्य का निर्माता बताया । निराला का जन्म 21 फरवरी 1896 उन्नाव में हुआ था । उन्होंने विभिन्न पारिवारिक कठिनाइयों के बीच संघर्ष करके अपनी पहचान बनायी वह एक कवि,उपन्यास कार निबंध कार, कहानीकार थे । आज के साहित्यकारों के लिए वह प्रकाश पुंज बनकर प्रेरणा देते रहेंगे। शिक्षाविद जगदीश पाहुजा ने कहा कि मन की शक्ति सर्वोच्च शक्ति है। इस पर नियंत्रण करके ही सफलता प्राप्त की जा सकती है। जप, तप,मौन,उपवास आदि मन को स्थिर करने के साधन है । यदि हमे हर समय निराशा घेरे रहती तो हमे मन की शक्ति को बढ़ाने की आवश्यकता है। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद उत्तर प्रदेश के महामंत्री प्रवीण आर्य ने कहा कि मन जब भी सीमाएं लांघता है तो वाणी अप्रिय हो उठती है और हम अपने प्रिय को भी अप्रिय शब्द कह देते हैं। योगाचार्य सौरभ गुप्ता ने कहा कि मौन मन की वह आदर्श अवस्था है जिसमें डूबकर मनुष्य परम शांति का अनुभव करने लगता है।

महर्षि दयानन्द का त्रेतवाद पर आर्य गोष्ठी सम्पन्न

त्रेतवाद का सिद्धान्त महर्षि दयानन्द सरस्वती की अनुपम देन है –डॉ. हरिओम शास्त्री

रविवार,28 फरवरी 2021,केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के द्वारा महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा प्रतिपादित त्रैतवाद सिद्धान्त पर गोष्ठी का आयोजन जूम पर ऑनलाइन किया गया। यह परिषद का 181वां वेबिनर था। वैदिक विद्धवान डॉ हरिओम शास्त्री (फरीदाबाद) ने कहा कि महर्षि दयानन्द ने वेद, वेदांग, उपांग, उपनिषद सहित समस्त उपलब्ध प्राचीन साहित्य का अध्ययन किया था जिससे वह जान सके कि ईश्वर का जीवात्मा और प्रकृति से पृथक स्वतन्त्र अस्तित्व हैं। ईश्वर–जीव–प्रकृति की एक दूसरे से भिन्न पृथक व स्वतन्त्र सत्ताओं को ही त्रैतवाद के नाम से जाना जाता है।ये तीनों मिलकर ही सृष्टि को बनाते व चलाते हैं। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि ईश्वर से अतिरिक्त जीव व प्रकृति पृथक हैं, यह ईश्वर के बनाये व उसके अंश आदि नहीं हैं। जीव अनादि व चेतन तत्व है जबकि प्रकृति अनादि व जड़ तत्व है और यह दोनों ही अनेक बातों में ईश्वर के वश व नियन्त्रण में हैं। कार्यक्रम अध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल के अध्यक्ष प्रबोध चंद्र सूद,एडवोकेट ने कहा कि महर्षि दयानन्द जी ने अपनी इन मान्यताओं को बिना किसी की चुनौती के स्वयं ही अपने ग्रन्थों में प्रस्तुत किया है जिससे अद्वैतवाद खण्डित हो जाता है और त्रैतवाद अखण्डित रहता है वा सत्य सिद्ध होता है। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद उत्तर प्रदेश के महामंत्री प्रवीण आर्य ने कहा कि महर्षि दयानन्द ईश्वर को सृष्टि का धारण कर्ता, प्रलयकर्त्ता, जगत का स्वामी और जगत में व्यापक सत्ता बताते थे। गायिका प्रवीना ठक्कर,आदर्श मेहता,सुषमा गुगलानी,जनक अरोड़ा,रविन्द्र गुप्ता,नरेश खन्ना,कुसुम भण्डारी,संध्या पांडेय,प्रतिभा सपरा,प्रज्ञा आर्या आदि ने अपने गीतों से सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। इस अवसर पर अजेय सहगल, सौरभ गुप्ता,आनन्द प्रकाश आर्य,आनन्द सूरी,डॉ रचना चावला, ओम सपरा,उर्मिला आर्या(गुरुग्राम),सुरेश आर्य आदि उपस्थित थे।

ईश्वर का अस्तित्व व अस्तित्व के लिए ईश्वर पर आर्य गोष्ठी सम्पन्न

सारी सृष्टि का कण कण ईश्वरीय सत्ता का प्रमाण– डॉ. मनोज तंवर (गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय)

सृष्टि का रचयिता ईश्वर ही है–राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य

बुद्धवार, 24 फरवरी 2021, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में ईश्वर का अस्तित्व व अस्तित्व के लिए ईश्वर विषय पर गोष्ठी का आयोजन जूम पर ऑनलाइन किया गया। यह परिषद का कोरोना काल में 179 वां वेबिनार था। युवा वैदिक विद्वान डॉ मनोज तंवर(गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार) ने कहा की किसी मनुष्य या मनुष्य के समूहों में यह शक्ति नहीं कि वह जीवात्मा को उनके कर्मों के अनुसार जन्म दे सके व उनका पालन आदि कर सके जैसा कि ईश्वर करता है।यह भी ईश्वर के अस्तित्व का प्रमाण है।इस प्रकार से ईश्वर के अस्तित्व के अनेक प्रमाण दिये जा सकते हैं। विज्ञजनों के लिए एक ही प्रमाण निर्णय करने के लिए पर्याप्त होता है। सारी सृष्टि का कण कण ईश्वरीय सत्ता का स्वयं प्रमाण दे रहे है। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि सृष्टि का रचयिता ईश्वर ही है,आज कल हम बहुत तार्किक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भरी बातें करने लगे हैं।ईश्वर से जुड़े इन सवालों को भी वैज्ञानिक ढंग से खोजने का प्रयत्न करते रहते हैं।वैसे कभी–कभी हैरानी होती है एक ओर तो हम समस्त ब्रह्मांड की रचना का श्रेय ईश्वर को देते हैं और वहीं दूसरी ओर उसके अस्तित्व पर भी संदेह करते हैं। मुख्य अतिथि समाजसेवी,आर्य समाज वृन्दावन गार्डन, साहिबाबाद के प्रधान कृष्ण कुमार यादव ने कहा कि ईश्वर कैसा है व कौन है,यह जानने के लिए हमें उसे सबसे पहले आत्मविश्वास–सुदृढ़ आत्म– बल के रूप में अपने भीतर ही खोजना होगा तभी ईश्वर के दर्शन कर सकते हैं। कार्यक्रम अध्यक्ष आर्य नेत्री कुसुम आर्या,(पूर्व प्रधाना,आर्य समाज, मुरादाबाद) ने कहा कि ईश्वर सद्गुणों का– सत्प्रवृत्तियों का– श्रेष्ठताओं का समुच्चय है जो अपने अन्दर जिस परिमाण में जितना इन सद्गुणों को उतारता चला जाता है,वह उतना ही ईश्वरत्व से अभिपूरित होता चला जाता है। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद उत्तर प्रदेश के महामंत्री प्रवीण आर्य ने यज्ञनिष्ट,आर्य नेत्री सुमनलता गुप्ता(इंदिरापुरम) के आकस्मिक निधन पर शोक व्यक्त करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित की। गायिका सुदेश आर्या,कृष्णा देवी,प्रेमा हंस (ऑस्ट्रेलिया), रविन्द्र गुप्ता,प्रोमिला जसूजा, कुसुम भण्डारी,ईश्वर देवी आर्या, प्रवीना ठक्कर,आशा आर्या आदि ने अपने गीतों से सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। आचार्य महेन्द्र भाई, ईश कुमार आर्य,सौरभ गुप्ता,आनन्द सूरी,डॉ अनुराधा आनन्द,डॉ रचना चावला,हरिओम शास्त्री,सुरेश आर्य,नरेश प्रसाद,ललित बजाज आदि उपस्थित थे।

संत रविदास जयंती व 90 वां चंद्रशेखर आजाद बलिदान दिवस सम्पन्न

छुआछुत व भेदभाव समाप्त करना संत रविदास को सच्ची श्रद्धांजलि –आर्य रविदेव गुप्ता

क्रांतिकारियों के कारण मिली देश को आजादी –राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य

शनिवार,27 फरवरी 2021, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में भारतीय परंपरा के महान संत रविदास जी की जयंती व क्रांतिकारी चंद्रशेखर आजाद के 90 वे बलिदान दिवस पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन जूम पर कर श्रद्धांजलि अर्पित की गई । यह परिषद का कॅरोना काल में 180 वां वेबिनार था। वैदिक विद्वान आर्य रविदेव गुप्ता ने कहा कि समाज में फैले भेद–भाव, छुआछूत का संत रविदास ने जमकर विरोध किया । उन्होंने जीवन भर लोगों को अमीर–गरीब,ऊंच नीच समाज के हर व्यक्ति के प्रति एक समान सम्मान व श्रद्धा भावना रखने की प्रेरणा दी। उनका मानना था कि हर व्यक्ति को भगवान ने बनाया है, इसलिए सभी को एक समान ही समझा जाना चाहिए। वह लोगों को एक दूसरे से प्रेम और सम्मान करने की सीख दिया करते थे। वह सामाजिक समरसता के नायक रहे। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि महान क्रांतिकारी चंद्रशेखर आजाद प्रखर देशभक्त थे। उनसे प्रेरणा लेकर सैंकड़ो नोजवान आजादी की लड़ाई में कूद पड़े । उनका संकल्प ष्मैं आजाद हूँ, आजाद रहूँगा और आजाद ही मरूंगा" नारा लगाने वाले भारत की आजादी के लिए अपनी जान की कुर्बानी देने वाले देश के महान क्रांतिकारी स्वतंत्रता सेनानी चंद्रशेखर आजाद वास्तव में आजाद ही बलिदान हुए । अंग्रेजों की गोली से मरने के स्थान पर उन्होंने स्वयं की गोली से मरना पसंद किया और वीर गति को प्राप्त हुए ऐसे महान क्रांतिकारी के जीवन से राष्ट्रभक्ति की ऊर्जा का संचार होता है। चन्द्रशेखर आजाद ने वीरता की एक नई परिभाषा लिखी थी। कार्यक्रम अध्यक्ष डॉ. नरेन्द्र आहूजा शविवेकश (राज्य ओषधि नियंत्रक, हरियाणा सरकार) ने कहा कि संत रविदास ने जाति प्रथा के उन्मूलन में उल्लेखनीय प्रयास किया । आज भी उनके आदर्श अधूरे है जिसे सबने मिलकर पूरा करना है और एक ऐसे समाज की स्थापना करनी है जहाँ ऊंच नीच,भेदभाव द्वेष भावना न हो। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद उत्तर प्रदेश के महामंत्री प्रवीण आर्य ने कहा कि संत रविदास बहुत दयालु थे।दूसरों की सहायता करना उन□हें भाता था। कहीं साधु–संत मिल जाएं तो वे उनकी सेवा करने से पीछे नहीं हटते थे। योगाचार्य सौरभ गुप्ता ने कहा कि चन्द्रशेखर आजाद के बलिदान के बाद उनके द्वारा प्रारम्भ किया गया आन्दोलन और तेज हो गया, उनसे प्रेरणा लेकर हजारों युवक स्वतन्त्रता आन्दोलन में कूद पड़े। गायिका सविता आर्या,रविन्द्र गुप्ता,कुसुम भण्डारी,ईश्वर देवी आर्या,प्रवीना ठक्कर, आशा आर्या आदि ने अपने गीतों से सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। इस अवसर पर आचार्य महेन्द्र भाई, सत्यभूषण आर्य,आचार्य भानुप्रताप वेदालंकार,आनन्द प्रकाश आर्य,ईश कुमार आर्य, आनन्द सूरी,डॉ रचना चावला, हरिओम शास्त्री,सुरेश आर्य, ललित बजाज आदि उपस्थित थे ।

सम्पादक: **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मंयक प्रिटर्स**, 2199/63, नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली–5 दूरभाष : 41548503 मा. : 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी–176–177, कबीर बस्ती, दिल्ली–7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970